

سُورَةُ الْإِنْسَانِ

Surah 76 — Al-Insaan (Man) • Medinan • 31 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ ۚ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا ۚ
مَّذْكُورًا

बेशक इन्सान पर एक ऐसा वक्त आ चुका है कि वह कोई चीज़ क़ाबिले ज़िक्र न था

2

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ۚ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا ۚ بَصِيرًا

हमने इन्सान को मख़लूत नुत्फे से पैदा किया कि उसे आज़माये तो हमने उसे सुनता देखता बनाया

3

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۖ إِمَّا شَاكِرًا ۚ وَإِمَّا كَفُورًا

और उसको रास्ता भी दिखा दिया (अब वह) ख़्वाह शुक्र गुज़ार हो ख़्वाह नाशुक्रा

4

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا ۚ وَأَغْلَلًا ۚ وَسَعِيرًا

हमने काफ़ि़रों के ज़ंजीरे, तौक और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है

5

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ ۖ مِنْ كَأْسٍ ۚ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا

बेशक नेकोकार लोग शराब के वह सागर पियेंगे जिसमें काफ़ूर की आमेज़िश होगी ये एक चश्मा है जिसमें से खुदा के (खास) बन्दे पियेंगे

6

عَيْنًا ۚ يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۚ

और जहाँ चाहेंगे बहा ले जाएँगे

7

يُؤْفُونَ بِاللَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا ۚ كَانَ شَرُّهُ ۚ مُسْتَطِيرًا ۚ

ये वह लोग हैं जो नज़रें पूरी करते हैं और उस दिन से जिनकी सख्ती हर तरह फैली होगी डरते हैं

8

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ ۚ مِسْكِينًا ۚ وَيَتِيمًا ۚ وَأَسِيرًا

और उसकी मोहब्बत में मोहताज और यतीम और असीर को खाना खिलाते हैं

9

إِنَّمَا نَطْعِمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً ۚ وَلَا شُكُورًا

(और कहते हैं कि) हम तो तुमको बस खालिस खुदा के लिए खिलाते हैं हम न तुम से बदले के खास्तगार हैं और न शुक्र गुजारी के

10

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبَّنَا يَوْمًا عَبُوسًا ۚ قَمْطَرِيرًا ۚ

हमको तो अपने परवरदिगार से उस दिन का डर है जिसमें मुँह बन जाएँगे (और) चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती होंगी

11

فَوَقَّاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً ۚ وَسُرُورًا ۚ

तो खुदा उन्हें उस दिन की तकलीफ़ से बचा लेगा और उनको ताज़गी और खुशदिली अता फ़रमाएगा

12

وَجَزَّاهُمْ بِمَا صَبَرُوا ۚ جَنَّةً ۚ وَحَرِيرًا ۚ

और उनके सब्र के बदले (बेहिश्त के) बाग़ और रेशम (की पोशाक) अता फ़रमाएगा

13

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ لَا يَرُونَ فِيهَا شَمْسًا ۚ وَلَا زَمْهَرِيرًا ۚ

वहाँ वह तख्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे न वहाँ (आफ़ताब की) धूप देखेंगे और न शिद्दत की सर्दी

14

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۚ

और घने दरख्तों के साए उन पर झुके हुए होंगे और मेवों के गुच्छे उनके बहुत करीब हर तरह उनके एख्तेयार में

15

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ ۖ مِنْ فِضَّةٍ ۖ وَأَكْوَابٍ ۖ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۖ

और उनके सामने चाँदी के सागर और शीशे के निहायत शफ़फ़ा़ गिलास का दौर चल रहा होगा

16

قَوَارِيرًا ۖ مِنْ فِضَّةٍ ۖ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ۖ

और शीशे भी (काँच के नहीं) चाँदी के जो ठीक अन्दाज़े के मुताबिक बनाए गए हैं

17

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا ۖ كَان مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا

और वहाँ उन्हें ऐसी शराब पिलाई जाएगी जिसमें जनजबील (के पानी) की आमेज़िश होगी

18

عَيْنًا ۖ فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ۖ

ये बेहश्त में एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है

19

ۖ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَنٌ ۖ مُخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا ۖ مَنثورًا ۖ

और उनके सामने हमेशा एक हालत पर रहने वाले नौजवाल लड़के चक्कर लगाते होंगे कि जब तुम उनको देखो तो समझो कि बिखरे हुए मोती हैं

20

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا ۖ وَمُلْكًا ۖ كَبِيرًا

और जब तुम वहाँ निगाह उठाओगे तो हर तरह की नेअमत और अज़ीमुश शान सल्तनत देखोगे

21

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ ۖ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ ۖ وَحُلُوفٌ ۖ أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۖ وَسَقَائِهِمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا ۖ طَهُورًا

उनके ऊपर सब्ज़ क़ेब और अतलस की पोशाक होगी और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका परवरदिगार उन्हें निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएगा

22

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً ۖ وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا

ये यक्रीनी तुम्हारे लिए होगा और तुम्हारी (कारगुजारियों के) सिले में और तुम्हारी कोशिश काबिले शुक्र गुजारी है

23

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۖ

(ऐ रसूल) हमने तुम पर कुरान को रफ़ता रफ़ता करके नाज़िल किया

24

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ ءَاثِمًا أَوْ كَفُورًا ۖ

तो तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तज़ार में सब्र किए रहो और उन लोगों में से गुनाहगार और नाशुके की पैरवी न करना

25

وَأَذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً ۖ وَأَصِيلًا ۖ

सुबह शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो

26

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ ۖ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا

और कुछ रात गए उसका सज्जदा करो और बड़ी रात तक उसकी तस्बीह करते रहो

27

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ۖ ثَقِيلًا ۖ

ये लोग यक्रीनन दुनिया को पसन्द करते हैं और बड़े भारी दिन को अपने पसे पुश्त छोड़ बैठे हैं

28

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمَثَلَهُمْ تَبْدِيلًا

हमने उनको पैदा किया और उनके आज्ञा को मज़बूत बनाया और अगर हम चाहें तो उनके बदले उन्हीं के जैसे लोग ले आएँ

29

إِنَّ هَذِهِ ۖ تَذْكِرَةٌ ۖ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ ۖ سَبِيلًا ۖ

बेशक ये कुरान सरासर नसीहत है तो जो शरूख़ चाहे अपने परवरदिगार की राह ले

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًاۙ

और जब तक खुदा को मंज़ूर न हो तुम लोग कुछ भी चाह नहीं सकते बेशक खुदा बड़ा वाक्फिकार दाना है

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِۦ ۚ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًاۙ

जिसको चाहे अपनी रहमत में दाखिल कर ले और ज़ालिमों के वास्ते उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है